" दस **कहानियाँ** -1"

आश्विन गुप्ता के फेसबुक पेज **"Trust Me, I'm not Loyal"** से सम्पादित की गयी हैं |

फेसबुक पेज का Official Link नीचे दिया जा रहा है |

https://www.facebook.com/trustmeimnotloyal

प्राक्कथन

"Trust Me, I'm not Loyal" फेसबुक पेज मैंने वर्ष 2014 में बनाया था | इस पेज पर लिखी गयी सभी कहानियाँ और कवितायेँ मेरे द्वारा स्वरचित है | मैं जानता हूँ कि अभी मेरी लिखने की ये कला अपने शिशु काल में है और इसमें अभी और सुधार संभव है |

"Trust Me, I'm not Loyal" के नाम का और कोई दूसरा पेज नहीं है | इसे पाठकों का अपार स्नेह मिला है जिसका पता कहानियों पर आये लाइक्स और कमेंट्स से लगता है |

कहानियाँ और कवितायेँ लिखने के पीछे मेरा उद्देश्य है कि लोगों को उस परिस्थिति से अवगत कराना जिससे होकर उन्हें भी एक न एक दिन गुजरना पड़ सकता है |

इस **E-book** में लिखी हुई कहानियाँ इसी पेज से ली गयी है और नयी कहानियाँ पढ़ने के लिए मैं आश्विन गुप्ता, आप सभी पाठकों को अपने फेसबुक पेज पर आमंत्रित करता हूँ जिसका लिंक मैं एक बार पुनः नीचे लिख दे रहा हूँ |

https://www.facebook.com/trustmeimnotloyal

मेरा परिचय **E-Book** के अंत में दिया गया है |

आशा है कि आपको मेरी ये कोशिश जरूर पसंद आएगी |

सब खुश रहे |

पहली कहानी

एक निवाला अपने गले से नीचे नहीं उतार सकी वो माँ जब उसके बेटे ने पूछा कि माँ, स्कूल में टीचर जी कहती है कि बच्चे जैसा देखते है वो वैसा ही सीखते है ,क्या ये सच है माँ ?

हाँ बेटा, ये सच है ।

बेटे की आँखों में पानी आ गया |

जब माँ ने इसका कारण पूछा तो बेटा बोला कि माँ तुम पापा को समझाना कि वो दादी पर चिल्लाए नहीं और उनकी इज्जत करें क्योंकि मैं तुमसे ऐसा व्यवहार नहीं करना चाहता |

दूसरी कहानी

क्या गुजरी होगी उस बुढ़ी माँ के दिल पर जब उसकी बहु ने कहा कि माँ जी, आप अपना खाना बना लेना, मुझे और इन्हें आज एक पार्टी में जाना है |

बुढ़ी माँ ने कहा – बेटी मुझे गैस चुल्हा चलाना नहीं आता |

तो बेटे ने कहा कि माँ, पास वाले मंदिर में आज भंडारा है , तुम वहाँ चली जाओ ना | खाना बनाने की कोई नौबत ही नहीं आयेगी |

माँ चुपचाप अपनी चप्पल पहन कर मंदिर की ओर हो चली |

यह पुरा वाकिया 10 साल का बेटा रोहन सुन रहा था |

पार्टी में जाते वक्त रास्ते मैं रोहन ने अपने पापा से कहा कि पापा, मैं जब बहुत बड़ा आदमी बन जाऊंगा ना तब मैं भी अपना घर किसी मंदिर के पास ही बनाऊंगा |

माँ ने उत्सुकतावश पुछा : क्यों बेटा ?

.
.
.
.

रोहन ने जो जवाब दिया उसे सुनकर उस बेटे और बहु का सिर शर्म से नीचे झुक गया जो अपनी माँ को मंदिर में छोड़ आए थे |

रोहन ने कहा- क्योंकि माँ, जब मुझे भी किसी दिन ऐसी ही किसी पार्टी में जाना होगा तब तुम भी तो किसी मंदिर में भंडारे में खाना खाने जाओगी ना | और मैं नहीं चाहता कि तुम्हें कहीं दूर के मंदिर में जाना पड़े |

तीसरी कहानी

बाहर बारिश हो रही थी और अन्दर क्लास चल रही थी , तभी टीचर ने बच्चों से पूछा कि अगर तुम सभी को 100-100 रुपये दिए जाए तो तुम सब क्या क्या खरीदोगे ?

किसी ने कहा कि मैं वीडियो गेम खरीदुंगा,
किसी ने कहा मैं क्रिकेट का बेट खरीदुंगा ,
किसी ने कहा कि मैं अपने लिए प्यारी सी गुड़िया खरीदुंगी,
तो किसी ने कहा मैं बहुत सी चॉकलेट्स खरीदुंगी |

एक बच्चा कुछ सोचने में डुबा हुआ था, टीचर ने उससे पुछा कि तुम क्या सोच रहे हो ? तुम क्या खरीदोगे ?

बच्चा बोला कि टीचर जी, मेरी माँ को थोड़ा कम दिखाई देता है तो मैं अपनी माँ के लिए एक चश्मा खरीदूंगा ।

टीचर ने पूछाः तुम्हारी माँ के लिए चश्मा तो तुम्हारे पापा भी खरीद सकते है, तुम्हें अपने लिए कुछ नहीं खरीदना ?

बच्चे ने जो जवाब दिया उससे टीचर का भी गला भर आया |

बच्चे ने कहा कि मेरे पापा अब इस दुनिया में नहीं है | मेरी माँ लोगों के कपड़े सिलकर मुझे पढ़ाती है और कम दिखाई देने की वजह से वो ठीक से कपड़े नहीं सिल पाती है इसीलिए मैं मेरी माँ को चश्मा देना चाहता हुँ ताकि मैं अच्छे से पढ़ सकूँ, बड़ा आदमी बन सकूँ और माँ को सारे सुख दे सकूँ ।

चौथी कहानी

गणतंत्र दिवस के दिन कोटा रेलवे स्टेशन के प्लेटफोर्म नं 2 पर बैठे उस जेन्टलमेन की नजर एक बच्चे पर पड़ी जो इतनी कड़कड़ाती हुई ठंड में किसी स्कूल की यूनिफोर्म पहने एक हाथ में अपनी छोटी बहिन या भाई और दूसरे एक मटमेला सा थैला लेकर घूम रहा था |

तभी बच्चा उस जेन्टलमेन के नजदीक आकर बोला - साहब गणतंत्र दिवस की बहुत बहुत बधाई, साहब जूते पोलिश करूँ ?

आदमी ने उससे पूछा कि आज तो गणतंत्र दिवस है तुम स्कूल जाने के बजाए यहाँ जूते पोलिश क्यों कर रहे हो ?

उस बच्चे के जवाब ने उस जेन्टलमेन को अंदर तक झकझोर के रख दिया |

.

.

बच्चे ने उदारता के साथ कहा कि साहब आज रविवार है और मैं हर रविवार को जूते पोलिश करके कुछ पैसे कमा लेता हूँ जिससे मैं और मेरी अपाहिज माँ 2 वक्त की रोटी खा सके ।

जब उस जेन्टलमेन ने उसे 500 रूपये का नोट देना चाहा तो उस मासूम बच्चे ने कहा - साहब मेरी माँ ने मुझे हमेशा यही सिखाया है कि सिर्फ अपनी मेहनत से कमा कर खाओ इसलिए आप जल्दी से मुझे मेरे 5 रूपये दे दीजिए, मुझे और भी लोगों के जूते पोलिश करने है |

वो बच्चा अपने 5 रूपये लेकर चल पड़ा मगर वो बच्चा उस जेन्टलमेन को बहुत कुछ सीखा गया |

Thank You for previewing this eBook

You can read the full version of this eBook in different formats:

- HTML (Free /Available to everyone)
- PDF / TXT (Available to V.I.P. members. Free Standard members can access up to 5 PDF/TXT eBooks per month each month)
- Epub & Mobipocket (Exclusive to V.I.P. members)

To download this full book, simply select the format you desire below